SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में नारी

निर्देशक

बिलोश देवी, Ph.D

(एम.एड़. पी.एच.डी. शिक्षा)

Asst. Professor

अरावली शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

कारोता, नारनौल, हरियाणा।

शोधार्थी

रणधीर-१३०६०७५१२१

सिंघानिया विश्व

विद्यालय पचेरी बड़ी

झुन्झुनु, राज०.

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

महर्षि जी ने अपने ग्रन्थों में स्त्री शिक्षा को बहुत अधिक महत्व दिया है। उनके मत में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति उसी दशा में सम्भव है जब सब स्त्री पुरूष सुशिक्षित हो। सब को धर्म-अधर्म और कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का समुचित ज्ञान हो। विद्या तथा विज्ञान को सबके हित-कल्याण के लिए प्रयुक्त किया जाए। सर्वांगीण शिक्षा के लिए उन्होनें स्त्री को उत्तम-शिक्षा दिलाने का ही निर्देश दिया है।

भारतवर्ष जैसे शिक्षा प्रधान देश में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखने का एक मध्यकाल ही नहीं आया किन्तु यह हवा ऐसी चली कि स्त्रियों को विदेशों में भी शिक्षित नहीं किया जाता था। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सन् १९२० तक स्त्रियों को उपाधि तक देना उचित नहीं माना जाता था। वस्तुतः ऋषि दयानन्द के समय तक नारी-शिक्षा का प्रचार नाममात्र को भी नहीं था।

उस काल में परिस्थिति एवं स्वार्थवश लोगो ने नारी के लिए प्रचारित करना प्रारम्भ किया कि-

ढोल गैवार शूद्र पशु नारी।

ये सब ताड़न के अधिकारी।।

द्वार किमेकं नरकस्य नारी।

स्त्रीशूद्रों नाधीयातामिति श्रुतेः।।

ऋषि दयानन्द ने नारी की इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्दशा को जब अपनी आँखों से देखा तब उन्होनें जहां देश, धर्म, यज्ञ, समाज, सभ्यता, संस्कृति गौ, ज्ञान विज्ञान आदि विषयों पर अपनी लेखनी उठाई, वहीं नारी विषय पर भी अपने छोटे-छोटे अनेक ग्रन्थों में तथा विशेष रूप से वेद भाष्य में स्थान-स्थान पर चर्चा की है।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में नारी-

स्वामी दयानन्द ने मनु की पंक्तियों का उल्लख किया जिसमें कहा गया है - जहां स्त्रियां दुःखी और कष्टमय जीवन व्यतीत करती है वह परिवार शीघ्र नष्ट हो जाते है, जबकि जहां स्त्रियों का सम्मान होता है, वे परिवार सदा समृद्ध रहते हैं।

स्त्रियों की शिक्षा के पाठ्य विषय

महर्षि ने स्त्रियों को दी जाने वाली शिक्षा और पढ़ाये जाने वाले विषयों का कुछ विस्तार से वर्णन किया है। वे स्त्रियों को उनके वर्ण तथा आवश्यकता के अनुसार सब प्रकार की उपयोगी शिक्षा देना चाहते थे, जिससे वे सुगृहिणी बने, घर के सब कार्यो को भली-भाँति कर सके। पति को प्रसन्न रखे और बच्चों का लालन-पालन और शिक्षा समुचित रूप से करे । महर्षि के मतानुसार स्त्रियों को दो प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए सामान्य तथा विशेष।

सामान्य शिक्षा का अभिप्राय उन्हें पुरूषों के समान दी जाने वाली व्याकरण आदि की शिक्षा थी, जो उन्हें भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ बनाती थी। विशेष शिक्षा उन्हें गृहकार्यो को दक्षतापूर्वक सम्पन्न करना, सन्तान की उत्पति और उनका पालन-पोषण वर्धन सिखाती थी। घर के कार्यो को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए उन्हें चिकित्सा शास्त्र और वैद्यक का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि वे घर में सब व्यक्तियों का स्वास्थय उत्तम बनाये रखने के लिए व्यवस्था कर सकें, जिससें घर में कभी कोई रोग न हो और सब लोग सदा प्रसन्न रहें। शिल्पविद्या का अभिप्राय घरेलू कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की कारीगरी का ज्ञान है। महर्षि इसमें घर के बनवाने तथा वस्त्र-आभूषण की निर्माण कला को सम्मिलित करते हैं। गणित का ज्ञान वे घर के हिसाब-किताब को ठीक रखने के लिए आवरयक मानते हैं।

इसके साथ ही वह स्त्रियों को वेदादि शास्त्रों की शिक्षा देना भी जरूरी समझते हैं ताकि वे ईश्वर और धर्म के स्वरूप को जान सकें और अधर्म से बच सकें। स्त्रियां न केवल सुगृहिणी हो, अपितु वे सच्चे अर्थो में पति की सहधर्मिणी हों । उनका यह विश्वास था कि यदि ऐसा नहीं तो घर में निरन्तर कुहराम और झगड़ा मचा रहेगा । उनके शब्दों में 'भला जो पुरूष विद्वान और स्त्री अविदुषी, स्त्री विदुषी और पुरूष अविद्वान हो तो नित्य - प्रति देवासुर - संग्राम घर में मचा रहे। फिर सुख कहां?

इसलिए घर को सुख और शान्ति का धाम बनाये रखने के लिए वे स्त्रियों की शिक्षा को अतीव आवश्यक समझते थे। महर्षि की स्त्री शिक्षा की योजना की एक बड़ी विशेषता यह थी कि वह नारियों के आत्मा, मन, बुद्धि और शरीर का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे । इसमें गृहिणी के रूप में उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यो के लिए आवश्यक विषयों के प्रशिक्षण का निर्देश किया गया था।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सउल्लास में जहां शिक्षा के विषय में विस्तार से लिखा वहां स्त्रियों की शिक्षा की विषय में विविध प्रश्नोत्तर करते हुए लिखा – ''क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पड़े? जो ये पढ़ेंगे तो हम-फिर क्या करेंगे? और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नहीं है जैसा यह निषेध है 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः' स्त्री और शूद्र न पढ़े यह श्रुति है। महर्षि ने इसका उत्तर लिखा – 'सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है। तुम कुओं में पड़ो और यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना से हुई है। किसी प्रमाणिक ग्रन्थ की नहीं।' महर्षि ने स्त्रियों की शिक्षा का विरोध करने वालों को कठोरतापूर्ण शब्दों में उत्तर दिया – ''जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो, यह तुम्हारी मूर्खता स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है।'' लड़के और लड़कियों की शिक्षा को महर्षि ने अनिवार्य माना– ''इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।'' इसी समुल्लास में स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार पर प्रश्न उठाते हुए महर्षि ने लिखा – क्या स्त्री लोग भी वेदों का पढ़े?'' उत्तर देते हुए महर्षि लिखते हैं – ''अवश्य! देखों, श्रोतसूत्रादि में 'इस मन्त्र पत्नी पठत्ो।'' अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़ों। जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़े होते तो यज्ञ में स्वरसहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत-भाषण कैसे कर सके? भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषणरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़के पूर्ण विदूषी हुई थी, यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। महर्षि ने विषय को विस्तृत करते हुए लिखा ''ब्राह्मणी और क्षत्रिया को सब विद्या, वैश्या को व्यवहार विद्या और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिए।

नारी के लिए आदर और सम्मान समाज तथा परिवार में प्राप्त होना चाहिए, तभी परिवार और समाज में सुख एवं शान्ति का राज्य सम्भव है – इस विचारधारा का महर्षि दयानन्द ने स्वग्रन्थों में प्रबल रूप से पोषण किा है। उन्होनें स्पष्ट लिखा – ''स्त्री का पूजनीय देव पति और पुरूष की पूजनीय अर्थात् सत्कार करने योग्य स्त्री है। स्त्री के लिए पति और पुरूष के लिए पत्नी पूजनीय है।''महर्षि ने सुख का मलकारण नारी और पुरूष की परस्पर प्रसन्नता माना है। अतः वेदभाष्य में उन्होनें भावार्थ रूप में अपने इद्गार प्रकट किए जो पुरूष स्त्रियों का और जो स्त्री पुरूषों का सत्कार करती है उनके कुल में सब सुख निवास करते हैं और दुःख भाग जाते है। पति स्त्री का और पति का सदा सत्कार करे। इस प्रकार आपस में प्रीतिपूर्वकर मिलके ही सुख भोगे। नारी के प्रति श्वशुरालपक्ष का उत्त व्यवहार महर्षि ने इन शब्दों में प्रकट किया –

''अपने घर आके पति, सासु, श्वसुर, ननन्द देवर, देवरानी, ज्येष्ठ, जेठानी आदि कुटुम्ब के मनुष्य वधू की पूजा अर्थात् सत्कार करें। सदा प्रीतिपूर्वक परस्पपर वर्तें और मधुर वाणी, वस्त्र, आभूषण आदि से सदा प्रसन्न और सन्तुष्ट वधू को रखे।''

महर्षि दयानन्द ने नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन स्वग्रन्थों में दर्शाया है। उन्होनें जहां उसे विदुषी बना समाज के समक्ष आदर दिलवाया वही वधू बनाकर उसका सम्मान करवाया। साथ ही माता का रूप समाज के समक्ष रखकर उसे श्रद्धास्पद बनाया।

महर्षि दयानन्द ने नारी के उस वीर रूप को स्वग्रन्थों तथा वेदभाव्य प्रसंगों में स्थान देते हुए कहा - देखा - आर्यवर्त्त के राजपुरूषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी, क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकती और सुद्ध कर सकती थी। ''सभापति आदि को चाहिए कि जैसे युद्धविद्या से पुरूषों को शिक्षित करे, वैसे ही स्त्रियों को भी शिक्षित करे। जैसे वीर पुरूष युद्ध करे, वैसे स्त्रियां भी करे। जो रानी धनुर्वेद जानने वाली, शस्त्रास्त्र चलाने वाली है, उसका वीरों का निरन्तर सत्कार करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने स्वग्रन्थों में नारी के न्यायप्रिय स्वरूप को देखकर लिखा-''जैसे ब्राह्मण पुरूषों और ब्राह्मणी स्त्रियों को पढावे, वैसे ही राजा पुरूषों को और रानी स्त्रियों का न्याय तथा उन्नति सदा किया करें।'' नारियों का न्याय नारी ही करें - इस पक्ष का कारण देते हुए महर्षि लिखते है - स्त्रियों का न्यायादि पुरूष न करें, क्योंकि पुरूषों के सामने स्त्री लज्जित और भययुक्त होकर यथावत् बोल वा पढ़ नहीं सकती।'' गृहाश्रम की उन्नति का मूलाधार महर्षि ने नारी और पुरूष दोनों को ही माना है। वह चाहे सन्तानों की उन्नति का प्रसंग हो या शारीरिक स्वास्थ्य का लक्ष्य हो अथवा सामाजिक प्रगति की चर्चा हो - महर्षि सवत्र ही स्त्रो को अग्रगामिनी मानते हुए वेदभावार्थ में उसे वर्णित करते है।

नारी विष्यक अनेक विचार महर्षि दयानन्द ने अपनी वाणी और लेखनी से समाज के सामने रखे। समाज में व्याप्त बालविवाह और उससे उत्पन्न अनेक दोषों को देखकर महर्षि ने लिखा- ''सोहलवे वर्ष से लेकर चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवे वर्ष से लेकर अढ़तालीसवें वर्ष तक पुरूष का विवाह समय उत्तम है। जिस देश में इसी प्रकार विवाह की विधि, ब्रह्मचर्य और विद्याभ्यास अधिक होता है, वह देश सुखी और जिस देश में ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास रहित बाल्यावस्था और अयोग्यों का विवाह होता है वह देश दुख में डूब जाता है। जो ब्रह्मचर्य धारण, विद्या, उत्तम शिक्षा का ग्रहण किये बिना अथवा बाल्यावस्था में विवाह करते है वे स्त्री पुरूष नष्ट-भ्रष्ट होकर विद्वानों में प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं होते।'' पूना में प्रदत्त २२ वे प्रवचन में महर्षि नारी-दुर्दशा को दूर करने के लिए बोले- ''यदि इस समय हम लोगों में बाल-विवाह प्रचलित न होता तो विधवाओं की संख्या कभी इतनी न होती और न इतने गर्भपात और इतनी भ्रूणहत्याएं होती है।''

बाल -विवाह के साथ - साथ महर्षि ने अनमेल विवाह का भी प्रबल शब्दों में विरोध किया है। उनका मन्तव्य था कि जिन स्त्री-पुरूषों का विवाह हो, उन्हें विद्या, कुल, रूप, शरीर, धन, गुण कर्म, स्वभाव आदि में तुल्य होना चाहिए। विवाह सम्बन्ध का निर्धारण माता-पिता द्वारा न किया जाकर युवती द्वारा स्वेच्छापूर्वक किया जाना चाहिए। महर्षि ने स्वयंवर विवाह का समर्थन किया है। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का अवलोकन करने के पश्चात् सरलता से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि महर्षि की दृष्टि में नारी माता, स्त्री, पत्नी आदि विभिन्न रूपों में आदरणीय मानी गई है। वह समाज को आगे ले जाने वाली उपदेशिका है। कन्याओं को शिक्षित करने वाली विदुषी अध्यापिका है, युद्ध के मैदान में शत्रुसमूह पर विद्युत की तरह टूटने

वाली वीरांगना है, राष्ट्र को वीर सन्तान देने वाली वीप्रसवा है, पति का सुख और सौभाग्य देने वाली पतिव्रता नारी है और घर में अन्न, दूध, दही के घड़े भर देने वाली अन्नपूर्णा है। नारी वह नींव है जिस पर केवल पुरूष अपितु परिवार, समाज, ग्राम, नगर देश और राष्ट्र खड़े होकर सुरक्षित तथा सुरभित है।

महर्षि मनु ने इसलिए कहा था –

यत्र नार्मस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

महर्षि ने इस श्लोक को अपने ग्रन्थों में उद्धृत किया। वस्तुतः जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात सत्कार होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम सन्तान होते है और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती वहां जानो उनकी सब क्रियाएं निष्फल है। महर्षि द्वारा किये इस गम्भीरार्थ से नारी के प्रति उनका श्रद्धाभाव सरलता से जाना जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ''सर्तहितकारी'' आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक, ७ फरवरी २००४।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ''आर्य जगत'', आर्य समाज भवन, नई दिल्ली, १८ से २४ जनवरी २००४।

दयानन्द स्वामी, ''सत्यार्थ प्रकाश, ''आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा सम्पादित, ३६ संस्करण, दिल्ली, १९८८।

विवरण पत्रिका, ''कन्या गुरूकुल, बचगांवा (गामड़ी) कुरूक्षेत्र'', कन्या गुरूकुल प्रबन्ध समिति, २००४ं

विवरण पत्रिका, ''ग्रोथ ऑफ दा गुरूकुल विद्यापीठ (१९२०–२००५)'', महासभा गुरूकुल विद्यापीठ, २००५।